नोट

इकाई–5: आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक योगदान

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

5.1 पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की लेखन कुशलता

5.2 साहित्य सम्बंधी मान्यताएँ

5.3 'बाणभट्ट की आत्मकथा' : कथासार/कथावस्तु

5.4 सारांश (Summary)

5.5 शब्दकोश (Keywords)

5.6 अभ्यास प्रश्न (Review Questions)

5.7 सन्दर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के साहित्यिक योगदान को जानने में;
- पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की लेखन कुशलता का वर्णन करने में;
- साहित्य संबंधी मान्यताओं की जानकारी प्राप्त करने में;
- बाणभट्ट की आत्मकथा के कथासार को समझने में।

प्रस्तावना (Introduction)

पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी-साहित्य के विख्यात कृती हैं। अन्वेषक, इतिहास लेखक, आलोचक, निबंध-लेखक, संपादक, व्याख्याता तथा उपन्यासकार के अतिरिक्त आप कुशल वक्ता और सफल अध्यापक भी हैं। आपके अध्ययन की विशालता के भीतर ये सभी व्यक्तित्व निर्बंध होकर स्फुटित हुए हैं। यह कहना कठिन है कि आपका कौन-सा साहित्यिक व्यक्तित्व सर्वाधिक महिमामय है।

5.1 पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की लेखन कुशलता

हिंदी-साहित्य में अन्वेषण की अनेक नवीन दिशाओं की ओर संकेत करके द्विवेदी जी ने उसकी परिधि का विस्तार किया है और साहित्य के इतिहास-लेखन के आदर्श को आगे बढ़ाया है। आलोचक के रूप में आपने साहित्य के मूल्यांकन की मानवतावादी भूमि की प्रतिष्ठा की है। निबंध-लेखक के रूप में आपने आत्म-व्यंजना के अनेक सफल प्रयोग किए हैं। संपादक के रूप में आपने मौखिक परंपरा से विकसित क्षेपक की माया से मुक्त करके 'रासो' जैसी विवादास्पद कृति को उसके मूल रूप में व्यवस्थित किया है। व्याख्याता के रूप में आपने कालिदास के काव्य में

Scanned by CamScanner

नोट

संश्लिष्ट दार्शनिक तत्ववाद को सहृदयतापूर्वक विश्लिष्ट करके व्याख्या की एक नवीन मर्मोद्घाटिनी परंपरा को जन्म दिया है और उपन्यासकार के रूप में आपने इतिहास की प्राणशक्ति को उद्दीप्त किया है। आज का कोई अन्य गद्यकार व्यक्तित्व के इस बहुमुखी विकास का दावेदार नहीं है।

पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी की समस्त कृतियों की संख्या 30 से ऊपर है। 'हिंदी साहित्य की भूमिका' (1940 ई०), 'हिंदी साहित्य का आदिकाल' (1952 ई०), और 'हिंदी साहित्य उद्भव और विकास' (1953 ई०) आपके प्रसिद्ध साहित्येतिहास ग्रंथ हैं। 'अशोक के फूल' (1948 ई०), 'कल्पलता' (1951 ई०), 'विचार और वितर्क' (1954 ई०), 'विचार-प्रवाह' (1959 ई०), 'कुटज' (1964 ई०) और 'आलोक पर्व' (1972 ई०) आपके निबंध-संग्रह हैं। 'सूर-साहित्य' (1936 ई०), 'कबीर' (1942 ई०), 'नाथसंप्रदाय' (1950 ई०), 'आधुनिक हिंदी साहित्य पर विचार', 'साहित्य का मर्म' (1949 ई०), 'लालित्य मीमांसा' (1962 ई०), 'साहित्य सहचर' (1965 ई०), 'कालिदास की लालित्य योजना' (1965 ई०), 'मृत्युंजय रवीन्द्र', 'मध्यकालीन बोध का स्वरूप' (1970 ई०) आदि आपके अनुसंधान एवं आलोचना ग्रंथ हैं। 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद', 'मध्यकालीन धर्म साधना' (1952 ई०), 'सहज-साधना' (1963 ई०) आदि आपकी धर्म एवं संस्कृति से सम्बंधित कृतियाँ हैं। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' (1947 ई०), 'चारु चंद्रलेख' (1963 ई०), 'पुनर्नवा' (1973 ई०) और अनामदास का पोथा' (1976 ई०) आपके प्रसिद्ध उपन्यास ग्रंथ हैं। 'नाथ सिद्धों की बानियाँ' (1957 ई०), 'संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो' (1957 ई०), 'संदेश रासक' (1960 ई०), 'दशरूपक' (1963 ई०) आदि ग्रंथों का आपने संपादन किया है। 'मेघदूत: एक पुरानी कहानी' में आपने मेघदूत काव्य में अंतर्निहित तत्ववाद का मार्मिक विश्लेषण किया है। 'सिक्ख गुरुओं का पुण्य स्मरण' (1979 ई०) लिखकर आपने इन गुरुओं के प्रति अपनी श्रद्धा निवेदित की है। 'लालकनेर', 'मेरा बचपन' (1956 ई०) और 'दो बहनें' (1956 ई०) आपकी अनूदित कृतियाँ हैं। 'महापुरुषों का स्मरण' (1987 ई०) का प्रकाशन आपकी मृत्यु के बाद किया गया है। इसका संपादन आपके सुपुत्र **मुकुंद द्विवेदी** ने किया है। यह एक प्रकार से संस्मरण ग्रंथ है। इसमें ज्योतिर्विद **आर्यभट्ट** से लेकर कवि **श्री सोहनलाल** द्विवेदी तक कुल 29 महापुरुषों को याद किया गया है। इससे द्विवेदीजी की भाव-परिधि के विस्तार की सूचना मिलती है। 'पत्र हजारी प्रसाद द्विवेदी' (1983 ई०) शीर्षक से आपके बिखरे हुए महत्वपूर्ण पत्रों का संपादन भी **मुकुंद द्विवेदी** ने किया है इससे द्विवेदीजी के व्यक्तित्व को भीतर से पहचानने के लिए दृष्टि मिलती है। अब यह समूचा कृतित्व 'हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली' शीर्षक से 'राजकमल प्रकाशन' द्वारा कुल ग्यारह खंडों में प्रकाशित कर दिया गया है। इस वैविध्यपूर्ण विशाल वाङ्मय के स्रष्टा रूप में द्विवेदीजी का व्यक्तित्व अभिनंदनीय है।

5.2 साहित्य सम्बंधी मान्यताऐं

पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य की व्याख्या में सर्वाधिक पृष्ठ खर्च किए हैं। उनके अध्ययन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने साहित्य को मनुष्य-सत्य के संदर्भ में देखा है। मनुष्य को ही साहित्य का लक्ष्य स्वीकार किया है और उस सारे वाग्जाल को साहित्य मानने में संकोच प्रकट किया है, जो मनुष्य की आत्मा को तेजोद्दीप्त न बना सके। आपके अनुसार **"साहित्य, वस्तुत: मनुष्य का वह उच्छलित आनंद है जो उसके अंतर में अँटाए नहीं अटा सका था।"** इस आनंद का आधार 'एकत्व की अनुभूति' है। इस अनुभूति को ही हम मनुष्य का धर्म या मनुष्यता कह सकते हैं। इस प्रकार मनुष्यता का उच्छलन ही साहित्य का मर्म है। इसलिए साहित्य की सभी विधाओं का मूल्यांकन 'मनुष्यता' के संदर्भ में ही किया जाना चाहिए। मनुष्य की चरम मनुष्यता–एकत्व की अनुभूति-संवेदना के आधार पर ही संभव है। संवेदना एक अपूर्व द्रावक रस है, जो हमें दूसरों के लिए आत्म-बलि देना सिखाता है। यही संवेदना ललित कलाओं का प्राण है। इसी संवेदना के विस्तार से हम संसार की नाना ज्ञानधाराओं की बाहरी विरोध-मूलक स्थिति को भेदकर उनके मूल में मानव-चेतना का अखंड विलास देख सकते हैं। अतएव ज्ञान-धाराओं को उनकी अखंडता में ग्रहण करने के लिए साहित्य को उसकी पूर्णता में अनुभूत करने के लिए, हमें काव्य, धर्म, दर्शन, ज्योतिष, विज्ञान, इतिहास आदि सभी कुछ देखना होगा। मनुष्य जीवन का अखंड

Scanned by CamScanner

प्रवाह इन्हीं के माध्यम से प्रवाहित हुआ है और साहित्य का इतिहास वस्तुतः मनुष्य-जीवन के अखंड प्रवाह का इतिहास है। द्विवेदी जी के शब्दों में साहित्य मानव-जीवन से उत्पन्न होकर सीधे मानव-जीवन को प्रभावित करता है। साहित्य में उन सारी बातों का जीवन्त विवरण होता है, जिसे मनुष्य ने देखा है, अनुभव किया है, सोचा है और समझा है।

द्विवेदीजी ने 'मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है', 'मानव-सत्य', 'सच्चा साहित्यकार', 'मानवधर्म', 'साहित्य का मर्म' आदि निबंधों में अपनी इसी मान्यता को अनेक प्रकार से व्यक्त किया है। उन्होंने सारे काव्य, साहित्य, ज्ञान, विज्ञान, कला, दर्शन के मूल में मानवीय चेतना को लक्षित किया है। मानवीय चेतना भाव और तथ्य के किनारों को स्पर्श करती हुई प्रवाहित होती है। जब वह 'भाव' को स्पर्श करती है तब काव्य और कला की सृष्टि होती है और जब वह तथ्य को स्पर्श करती है तो दर्शन और विज्ञान का विकास होता है। इस प्रकार काव्य-कला और दर्शन-विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। सबके मूल में अखंड चेतना का ही प्रवाह लक्षित होता है।

स्व-मूल्यांकन (Self-Assessment)

Scanned by CamScanner